UGC Approved
Refereed Journal
UGC
Jr.No.43053

Printing Area™

International Multilingual Research Journal

Issue-32, Vol-06, August 2017

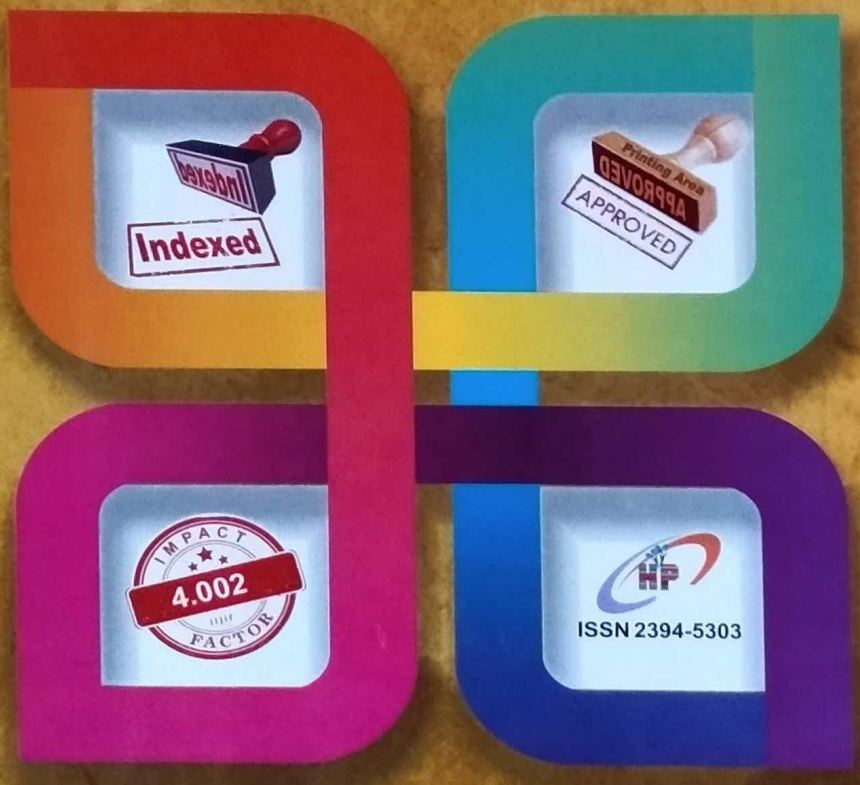

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

43

कुटीर उद्योग—चुनौतियॉ एवं विकास की सम्भावनाएँ

श्रीमती क्रेसेन्सिया टोप्पो
सहा.प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शास.एस.पी.एम.महाविद्यालय,
सीतापुर, जिला—सरगुजा छ०ग०

****

कुटीर उद्योगो से तात्पर्य उन उद्योगों से है, जो एक ही परिवार के सदस्यों द्वारा एक छत के नीचे पूर्णतः या आंशिक रूप से संचालित किये जाते है। राजकोषीय आयोग के शब्दों में— "कुटीर उद्योग वह है जो पूर्णतया या मुख्यतः परिवार के सदस्यों की सहायता से पूर्ण या आंशिक व्यवसाय के रूप में चलाये जाते है।" पी०एन०धर० तथा एच०एफ० लिडाल ने स्पष्ट करते हुए कहा है—"कुटीर उद्योग पूरी तरह घरेलू उद्योग होते है।"

किसी भी देश के औद्योगिक विकास में कुटीर एवं लघु उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान है। विकासशील राष्ट्र में लघु उद्योग अर्थव्यवस्था के मेरूदण्ड होते है लघु उद्योगों का हमारी अर्थव्यवस्था में प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है, रोजगार की दृष्टि से लघु उद्योग कृषि के बाद दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में पूंजी का अभाव, श्रम की अत्याधिक पूर्ति तथा तकनीकी ज्ञान का अभाव कुटीर उद्योगों के लिये खासा मायने रखता है। इन उद्योगों का अतीत काफी गौरवशाली रहा है। किन्तु ब्रितानी शासन काल मे इन उद्योगों का इतना ह्रास हुआ कि वे कुटीर उद्योगों का भविष्य चौपट हो गया, आजादी के पश्चात् नवगठित सरकार ने इस ओर ध्यान देना प्रारंभ किया नतीजन इन उद्योगों का अस्तित्व पुनः कायम हुआ है। वर्तमान में कौशल विकास की चर्चा जोरों से चल रही है। देश में सर्वाधिक कौशल विकास कृषि के इन पूरक उद्योग अर्थात् कुटीर उद्योगों में साफ तौर पर परिलक्षित हो रही है।

कुटीर उद्योग लघु उद्योग का अंश है, इस उद्योग मे पूंजी विनियोजन परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता है इसमे बाह्य पूंजी का कोई जगह नहीं होता है। कुटीर उद्योग में पूंजी का सीमित उपयोग होता है तथा श्रम की प्रधानता शामिल होती है। जिनका बाजार सीमित एवं संकुचित होता है। इन उद्योगों का संचालन परिवार के सदस्यो द्वारा समन्वित रूप से घरेलू वातावरण में परम्परागत तरीके से किया जाता है। जैसे— खादी, हथकरघा, खाद्य तेल, नारियल के रेशे से बने वस्तुएं, चमड़ा का कार्य इत्यादि शामिल है। समय के साथ इन उद्योगों का क्षेत्र व्यापक नजर आता है यही कारण है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में ग्रामीण उद्योगों को काफी सराहा गया है वजह है इन उद्योगों पर लाखों आदिवासियों का आर्थिक जीवन जुड़ा हुआ है।

कुटीर उद्योगों का स्वरूप:—

इन्हें मुख्यतः दो स्वरूप में विभक्त किया गया है प्रथम—ग्रामीण कुटीर उद्योग और दूसरा शहरी कुटीर उद्योग। ग्रामीण कुटीर उद्योग वे उद्योग है जो ग्रामीण परिवेश में अस्तित्व में होते है इन्हें भी हम दो श्रेणियों में श्रेणी बद्ध कर सकते है एक वह जो कृषकों द्वारा सहायक धन्धे के के रूप में स्वीकार करते है जैसे— मुर्गीपालन करघों पर बुनाई, पशुपालन, टोकरियॉ बनाना, रेशम के कीड़े पालना, रस्सी बनाना, मधुमक्खियॉ पालन मत्स्य पालन इत्यादि। दूसरा वह है जो ग्रामीण कौशल से जुड़े होते है जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, धानी से तेल निकालना तथा चमड़े के सामान बनाना इत्यादि।

शहरी कुटीर उद्योग जो शहरी क्षेत्र में स्थापित किये जाते है जिसमें खिलौने बनाना, कपड़े पर कढ़ाई करना, लकड़ी के फर्नीचर तैयार करना साबुन बनाना, कपड़े बुनना इत्यादि, शामिल किये जा सकते है।

कुटीर उद्योगों से विकास की संभावनाएं

भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था में जहॉ पूंजी का अभाव, गरीबी और बेरोजगारी का आलम है वहां कुटीर तथा लघु उद्योग सभी दृष्टि कोणों में आधारशिला के रूप में भूमिका निर्वाहन में सफल हो

सकती है। यह लघु उद्योग वर्तमान संदर्भ में भारत की क्षमताओं और भावी विकास में कुंजी के रूप में चरितार्थ हो सकती है। लाखों व्यक्तियों की उत्पादन क्षमता का उपयोग तथा विशाल अविदोहित साधनों के दोहन में कारगर हो सकता है। क्योंकि लघु उद्योगों में ही आज की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान का आधार समाहित है। महात्मा गॉधी जी ने कहा था —"भारत का मोक्ष उसके कुटीर धन्धों में नीहित है।" ज्यादातर लघु उद्योगों के लिये मध्यवर्ती वस्तु कुटीर उद्योग प्रदान करते है। उदा० हथकरघा पर कपड़े बुनकर हैण्डलुम लघु उपक्रमों में कपड़ा देना, जिस पर डिजाइन कढ़ी किया जा कर बेची जा सके।

वर्तमान संदर्भ में बढ़ती जनसंख्या के कारण तीर्व गति से बेरोजगारी की समस्या बढ़ी है चूंकि कुटीर उद्योग श्रम प्रधान होते हैं, इच्छित बेरोजगार ऐसे उद्योगों के द्वारा कम पूंजी के विनियोजन से रोजगार की शुरूआत को नया आयाम दे सकते है। कुटीर उद्योग चूंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अनुरूप है, परिवारिक व्यवसाय मे ही पहचान एवं सम्पत्ति सृजित करने का सुनहरा मौका मौजूद है, उदा० बढ़ाई राजमिस्त्री इत्यादि जिनका पारिश्रमिक दिन प्रतिदिन सतत रूप से बढ़ती जा रही है। कृषि व्यवसाय से संबद्ध व्यक्ति खाली समय का सदुपयोग कर स्वयं को कुटीर उधोगों से जोड़ते हुए धनउपार्जन में अभिवृद्धि करने में सफल हो सकता है, साथ ही देश की आय बढ़ोत्तरी में अहम भूमिका निभा सकता है।

कुटीर उद्योगों में प्रायः परम्परागत तरीको से परम्परागत वस्तुओं का उत्पादन किया जाता रहा है तथा स्थानीय बाजारों मे मांग की पूर्ति की जाती रही है। इन उद्योगों में कार्य करने के लिये उच्चशिक्षा अथवा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती, आधी आधुरी शिक्षा प्राप्त लोग बेहतर जीवन जीने की लालसा एवं शहरी आकर्षण से प्रभावित होकर नगरीय क्षेत्र में कूद कर जाते है इस दिशा में प्रभावी रोक के संदर्भ में कुटीर उद्योग एक सशक्त विकल्प बन सकता है। रंग—रोगन एवं अभिनव प्रयास से परम्परागत कलात्मक वस्तुओं को आधुनिक स्वरूप देने मे ग्रामीण जन—शक्ति का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान समय मे आय की असमानता बढ़ी है, साहसी और श्रमिकों के मध्य मतभेद, हड़ताल नारेबाजी प्रदर्शन तालेबन्दी आये दिन दृष्टिगोचर हो रही है, कुटीर उधोगों मे साहसी स्थानीय लोग होते है, श्रमिकों को मजदूरी पर कम संख्या में रखा जाता है जिसके फलस्वरूप इन उद्योगों मे श्रम के शोषण की संभावनाएं भी कम होगी तथा आय के समान वितरण का वातावरण भी सुलभ होगा। मौजुदा हालात में देश में कुटीर उद्योगों का विस्तार एवं बढ़ावा देकर धनी—गरीब के बीच की बढ़ती खाई को पाटने में सफलता हासिल की जा सकती है। आय की असमानता देश के लिये एक ज्वलन्त मुद्दा बन गया है। अतः कुटीर उद्योगों के संवर्धन से आर्थिक शक्तियों के विकेन्द्रीयकरण को बल मिलेगा।

प्रकृति उदारता के साथ—साथ कंजूस भी है। देश की धरातलीय संरचना, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, जलवायु तथा मानसून सभी क्षेत्रों में समान रूप से विद्यमान नहीं है। कुटीर उद्योग क्षेत्रीय विषमता को दूर करने में एक महत्वपूर्ण विकल्प बन सकता है। उद्योगों के अभाव में ग्राम्य जन शक्ति गॉव से अन्यत्र पलायन कर रही है रोजगार की तलाश में ग्रामीण जनसंख्या में गतिशील बढ़ी है। कुशल एवं दक्ष कारीगरों के द्वारा, कम पूंजी से अधिक कुशलता से स्वयं के परिवेश में अपने हाथों के माध्यम से वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है। आज आवश्यकता है कि कुटीर उद्योगों के पुनर्स्थापन तथा संवर्धन की, ताकि प्राचीन समय की गौरव को हम पुनः हासिल कर सकें। यदि यह पहल सफल हुआ तो अवश्य ही क्षेत्रीय विषमता में कमी आयेगी।

भारत गॉव प्रधान देश है, देश की ६७% जनसंख्या की आजीविका कृषि कार्य पर आधारित है, भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से को विकास की दिषा में आगे बढ़ने में कुटीर उद्योग मददगार रहा है और आगे भी जारी रहेगा। गॉव—कस्बे में आटा—चक्की तेल—मिल, हथकरघा खादी कपड़े, फसलों की कटाई, बिनाई संबंधी कार्य जमीनी स्तर पर किये जा रहे है, दर्जी, बढ़ाई, लोहार आदि परम्परागत पेशे इसी श्रेणी के समकक्ष है कुछ लोग छोटे स्तर पर घातुकर्म, चमड़े

का काम, विभिन्न मशीनों के पुर्जे बनाना, कागज कर थैली बनाना, ईंट बनाने का काम, आचार पापड़ बनाने संबधी क्रियाकलापों से जुड़े हुए है जो कुटीर उद्योगों के अस्तित्व को कायम रखे है इनकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। कुटीर उद्योग गॉव को उजड़ने से बचाने एवं उनके संरक्षण में मददगार है। अतः कुटीर उद्योगों के संरक्षरण की अति आवश्यकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास कुटीर उद्योग के लिये एक सुखद घरना रही है। इसका एक प्रमुख पक्ष यह रहा है कि प्रौद्योगिकी से कुटीर उद्योगों का स्वरूप परिवर्तित हुआ है उत्पादन क्षमता में अभिवृद्धि हुई है। फलों तथा सब्जियों का प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी पर आधारित कुटीर उद्योगों के माध्यम से सरलता से संभव हुआ है। बिस्किट, मसाले जैसे खाद्य वस्तुऍं वृहद पैमान पर निर्मित होने लगे है जहां रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। यह तथ्य निर्विवाद है कि कुटीर उधोगों में विकास की अपार संभावनाऍं समाहित है क्योंकि भारत में बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ मानव संसाधन की दैनिक आवश्यकताओं में भी निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है।

शहरी क्षेत्रों के कुटीर उद्योग भी विकास की संभावनाओं से अछूते नहीं हैं शहरी क्षेत्रों की जीवन शैली में क्रांतिकारी बदलाव आया है चाय, पान की दूकान, नाश्ता का दूकान, टाईपिंग केन्द्र, सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र इत्यादि को आधुनिक कुटीर उद्योगों की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि ये निजी अथवा स्वयं के छत के नीचे परिवारिक सदस्यों के समन्वय से संचालित हो रहे हैं।

कुटीर उद्योगों के मार्ग में बाधाऍं:–

कुटीर उद्योग जिसके अन्तर्गत बड़ी मशीन एवं पूंजी की प्रधानता न होकर काम की प्रधानता होती है जिसके प्रतिस्थापन में बड़ी पूंजी, बड़े भूखण्ड तथा बड़े पैमाने के बाजार की आवश्यकता शामिल नहीं होती। इसके बावजूद वर्तमान में कुटीर उद्योग के मार्ग में कई बाधाऍं सामने आ रही है जिसका सीधा सा असर इन उद्योगों पर देखा जा सकता है।

१. वर्तमान युग में मशीनी तथा प्रौद्योगिकीय व्यवस्था के प्रति आसक्ति बढ़ी है।

२. मनुष्य की परम्परागत जीवन शैली में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है वृहत मशीनों तथा प्रौद्योगिक से निर्मित वस्तुओं के प्रति आकर्षण तथा रूझान बढ़ रहा है। फलतः पर्यावरण प्रदूषण का खतरा भी बढ़ गया है। इसी संदर्भ में महात्मा गॉधी जी ने कहा था–"मशीनों को काम देने से पहले आदमी को काम दो"।

३. वित की समस्या –

पूंजी तथा साख का अभाव कुटीर उद्यागों की प्रधान समस्या है। इन इकाईयों का पूंजीगत आधार काफी कमजोर होता है, क्योंकि इनका संगठन साझेदारी अथवा अकेले स्वामित्व के आधार पर किया जाता है। घरेलु उद्योगों को चलाने वाले कारीगर या तो अपनी थोड़ी सी पूंजी से काम चलाते है या असंगठित क्षेत्र से ऋण लेकर अपना काम चलाते हैं अनेक कुटीर उद्योग वित्तीय कारणों से रून्गन या बंद हो जाते हैं।

४. उचित प्रषिक्षण की समस्या–

कुटीर उद्योगों का अस्तित्व एवं आधुनिकीकरण का उद्देश्य तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि कारीगरों के उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था न हो, इनके लिए निरंतर अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि उत्पादन का नया–नया तरीका एवं डिजाइनों को समावेश किया जा सके। इनके अभाव में ही कुटीर उद्योगों का पतन हो रहा है इसके अलावा मशीनी वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा करने में अक्षम हो रहे हैं।

५. प्रोत्साहन एवं सम्मान का अभाव –

कुटीर उद्योगों में उत्पादित वस्तुओं के लिए प्रदशर्नी और बेहतर प्रदर्शन पर प्रोत्साहन आवश्यक है। सरकार द्वारा प्रदर्शनी आयोजित की जाती है परन्तु यह अपर्याप्त नही है।

६. बाजार की समस्या–

कुटीर उद्योगों में निर्मित वस्तुएं स्थानीय बाजारों में ही बिकती है नगरो महानगरों तक टूट फुट की समस्या, रूचि, फैशन में आए बदलाव के कारण इनका बाजार संकुचित होता जा रहा है। पुराने औजारों एवं प्राचीन विधियों से चिपके रहने की विधि के कारण नवीन डिजाइन की वस्तुओं का उत्पादन नहीं हो पा रहा है, ये भी इनके विकास में बाधक हैं।

७. परिवहन की समस्या–

ग्रामीण तथा अर्द्ध शहरी क्षेत्रों में आज भी परिवहन के साधनों का विकास आधा–अधूरा है। कुटीर उद्योगों को कच्चा माल लाने तथा निर्मित माल मण्डियों या बाजारों तक पहुंचान में कठिनाई आती है, यही नहीं उनके अपने परिवहन के साधन भी नहीं होते इनकी व्यवस्था करने में समय एवं धन खर्च होने के कारण लागत उंची होती जाती है।

इस प्रकार वर्तमान में कुटीर उद्योगों के मार्ग में अनेक चुनौतियां हैं, इन्हें कम किए बिना इनका अस्तित्व कायम रखना कठिन होगा।

भारत में कुटीर उद्योगों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार को चाहिये कि उन्हें प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, सब्सिडी पर अनुदान की व्यवस्था वित प्रबंधन जैसी सुविधाओं का विस्तार करे। कच्चे माल तथा निर्मित माल के लिये बाजार में उपलब्ध कराये इन सबसे महत्ती आवश्यकता है इन उधोगों को संरक्षरण मुहैया कराये। यद्यपि सरकार इस दिशा में सतृत रूप से प्रयासरत है बावजूद इच्छित सफलता से हम काफी दूर है। आज कौशल विकास की सर्वाधिक संभावनाऍं कृषि के इन पूरक कुटीर उद्योगों में नीहित है जरूरत है तो सिर्फ इन्हें पहचानने तथा संवर्धन करने की एवं इमानदारी से क्रियान्वयन की। यदि ऐसा करने मे हम सफल हुए तो निश्चित ही अतीत के गौरव को पुनः प्रतिस्थापन करने में कामयाब होंगे।

संदर्भः–

(१) आर्थिक पर्यावरणः–(लघु,कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग)–वी०पी०गुप्ता, एच०आर० स्वामी।
(२) भारतीय अर्थव्यवस्थाः– (औद्योगिक स्थायीकरण आर्थिक असमानता, ब्रिटिया शासन के आर्थिक परिणाम, लघु एवं कुटीर उद्योग)– डॉ०एल०सी०जैन, आकोरिया।
(३) भारतीय आर्थिक नीतिः–(छोटे पैमाने के उद्योग)– डॉ०पी०डी०महेश्वरी डॉ० शीलचन्द्र गुप्ता।
(४) कृषि अर्थव्यवस्थाः– (भारत के ग्रामीण आर्थिक क्रियाकलाप)–डॉ० अजय प्रकाष मिश्रा

□□□

44

तकनीकी कृषि व्यवस्था एवं ग्रामीण श्रम पलायन

डॉ. एस. के. टोप्पो
सहा प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
टी.एस.एस.महाविद्यालय,
पत्थलगांव, जिला–जशपुर छ०ग०

****

भारत गावों का देश है। गॉव का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि और ग्रामीण पलायन का प्राचीन संबध रहा है। झूम खेती एक ऐसी प्रवृत्ति थी जिसमें कृषक खेती के लिए हर बार जंगल साफ कर अलग जगह पर खेती करते थे। सभ्यता का विकास होता गया। कृषक स्थायी कृषि, पशुपालन और काश्तकारी के I Hk'kq fd; A Lor ar k d sl e; nsk dh 75% जनसंख्या गांवों में और 25% जनसंख्या शहरों मे रहती थी। स्वतंत्रता के पूर्व कृषि पर आत्मनिर्भरता थी। देश सोने की चिड़िया के नाम से जानी जाती थी। ऐतिहासिक साक्ष्य यह बताता है कि कृषि रोजगार का बड़ा श्रोत था खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ लघुएवं कुटीर उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराता था। समस्त अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि ही थी। १९६० के लगभग से कृषि में हरित क्रान्ति के साथ आधुनिक तकनीकी लाकर कृषि के तरीकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया गया किन्तु कृषि में सुधार ग्रामीण पलायन को रोक नहीं पायी, आज भी पलायन का सिलसिला जारी है। पलायन बेहतर सुविधाओं की प्राप्ति का नाम है। मानव जीवन को सुविधाओं का उपभोक्ता कहा जा सकता है। साहित्यिक अर्थ में प्राचीन के प्रति असंतोष और नवीनता के प्रति उत्साह पलायन है। वैज्ञानिक दृष्टि में अपने वर्तमान रूप से असंतुष्ट होकर उन्नति या विकास की ओर प्रवृत होना पलायन है और सीमाओं से मुक्त होकर अनन्त और असीम की ओर